

## छत्तीसगढ़ में खनन हेतु वनों की कटाई

### चर्चा में क्यों?

केंद्र के अनुसार वन्यजीव और जैवविविधता संस्थाओं ने संबद्ध क्षेत्र में खनन गतिविधियों को पूर्ण रूप से प्रतिबंधित करने की सफारिश नहीं की जिसके चलते [हसदेव अरण्य वनों](#) में खनन गतिविधियों के लिये लगभग 273,000 अतिरिक्त वृक्षों को काटे जाने की आशंका है।

### प्रमुख बिंदु

- पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्रालय (MoEFCC) ने देश के दो सबसे विविध पर्यावरणीय मुद्दों पर जानकारी प्रदान की जिसमें छत्तीसगढ़ में हसदेव अरण्य में वनों की कटाई तथा [नीतिआयोग](#) की अंडमान एवं निकोबार द्वीप समूह परियोजना में ग्रेट निकोबार द्वीप का समग्र विकास शामिल हैं।
- छत्तीसगढ़ सरकार ने भारतीय वन्यजीव संस्थान के सहयोग से [भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद](#), देहरादून को संपूर्ण हसदेव-अरण्य कोलफील्ड्स क्षेत्र का जैवविविधता मूल्यांकन अध्ययन करने के लिये नियुक्त किया था।
  - अध्ययन किया गया और तत्पश्चात् पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय को रिपोर्ट सौंपी गई
  - रिपोर्ट के अनुसार, [परसा ईस्ट केते बासेन खदान](#) हेतु 94,460 वृक्ष काटे गए जबकि प्रतिपूरक वनीकरण, खदान सुधार और स्थानांतरण के रूप में 5.3 मिलियन से अधिक वृक्षों का रोपण किया गया
  - छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, हसदेव अरण्य में आगामी वर्षों में खनन के लिये 273,757 वृक्षों की कटाई की जानी है।
- हसदेव अरण्य मध्य भारत में सर्वाधिक सघन वनों के सबसे बड़े सन्नहित वसितारों में से एक है, जो 170,000 हेक्टेयर में वसित है और इसमें 23 कोयला ब्लॉक हैं
  - वर्ष 2009 में, पर्यावरण मंत्रालय ने हसदेव अरण्य को इसके समृद्ध वन क्षेत्र के कारण खनन के लिये “नो-गो” ज़ोन के रूप में वर्गीकृत किया था कति यहाँ खनन की पुनः अनुमति दे दी गई क्योंकि इसमें किसी नीति को अंतिम रूप नहीं दिया गया था।

### हसदेव अरण्य वन



- छत्तीसगढ़ के उत्तरी भाग में वसित हसदेव अरण्य वन अपनी जैवविविधता और कोयला नक्षेत्रों के लिये जाना जाता है।

- यह वन कोरबा, सुजापुर और सरगुजा ज़िलों के अंतर्गत आता है जहाँ जनजातीय जनसंख्या काफी अधिक है।
- **महानदी** की सहायक नदी हसदेव नदी यहाँ से होकर प्रवाहित होती है।
- हसदेव अरुंड मध्य भारत का सबसे बड़ा अक्षुण्ण वन है, जिसमें प्राचीन साल (शोरिया रोबस्टा) और सागौन के वन शामिल हैं।
- इसकी भूमिका प्रवासी गलियारे के रूप में प्रसिद्ध है और यहाँ महत्वपूर्ण संख्या में हाथी पाए जाते हैं।

PDF Reference URL: <https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/deforestation-for-mining-in-chhattisgarh>

